समाजीकरण की परिभाषा

समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति के अन्दर के जैविक गुणों का विकास होकर सामाजिक प्राणी बनता है। व्यक्ति समाज में रहता है और अपना विकास करता है। इस प्रकार, समाजीकरण का अभिप्राय सीखने की उस प्रक्रिया से है जो बालक के जन्म के बाद शुरू हो जाती है और जीवन भर सामाजिक गुणों को सीखने और उसे व्यवहार में ग्रहण करने में लगाती है और वह सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होने लगती है। इस प्रकार से यह एक प्रक्रिया है जिसमें मानव समाज द्वारा सिखता है जो उसके आस पास समाज में दिखता है। अतः एक व्यक्ति का समाजीकरण सामाजिक व्यवहार को सीखना है।

समाजीकरण की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न मत व्यक्त किए हैं जो निम्नलिखित है:—

जानसन के मतानुसार:— "समाजीकरण इस प्रकार का सीखना है सीखने वाले को सामाजिक कार्य करने योग्य बनाता है।"

ग्रीन के अनुसार:—

"समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चा सांस्कृतिक विशेषताओं, आत्म एवं व्यक्तित्व को प्राप्त करता है।"

फिचर के अनुसार —
"समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति सामाजिक व्यवहारों को स्वीकार करता है और उसके साथ अनुकूलन करता है।"

गिलिन व गिलिन के अनुसार :

"समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति समाज के एक क्रियाशील सदस्य के रूप में विकसित होता है, समूह की कार्यप्रणालियों से समन्वय करता है, उसकी परम्पराओं का ध्यान रखता है और सामाजिक स्थितियों में व्यवस्थापन करके अपने साथियों के प्रति सहनशक्ति की भावना विकसित करता है।"

एस. सी. दुबे के अनुसार —
"समाजशास्त्र व समाज के संदर्भ मे जिस प्रकार जिस प्रक्रिया को समाजीकरण कहता है, संस्कृति के संदर्भ मे मानवशास्त्र उसे स्वसंस्कृतिग्रहण कहता है चूंकि समाजीकरण का संबंध व्यक्ति और समाज के बीच के संबंधों से है। अतः इस अर्थ मे यह अवधारणा समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान के बीच सेतु का काम करती है।